

श्रीमद्भागवतम्

स्कन्ध 3



SGD

श्रीमद् भागवत पुराण

अध्याय 33

कपिल के कार्यकलाप

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

श्लोक 1: श्री मैत्रेय ने कहा : इस प्रकार भगवान् कपिल की माता एवं कर्दम मुनि की पत्नी देवहूति भक्तियोग तथा दिव्य ज्ञान सम्बन्धी समस्त अविद्या से मुक्त हो गईं। उन्होंने उन भगवान् को नमस्कार किया जो मुक्ति की पृष्ठभूमि सांख्य दर्शन के प्रतिपादक हैं और तब निम्नलिखित स्तुति द्वारा उन्हें प्रसन्न किया।

श्लोक 2: देवहूति ने कहा :
ब्रह्माजी अजन्मा कहलाते हैं, क्योंकि
वे आपके उदर से निकलते हुए
कमल-पुष्प से जन्म लेते हैं और आप
ब्रह्माण्ड के तल पर समुद्र में शयन
करते रहते हैं। लेकिन ब्रह्माजी ने भी
केवल अनन्त ब्रह्माण्डों के उद्गम
स्रोत, आपका ध्यान ही किया।

श्लोक 3: हे भगवान्, यद्यपि
आपको निजी रूप से कुछ करना नहीं
रहता, किन्तु आपने अपनी शक्तियाँ
प्रकृति के गुणों की अन्तःक्रियाओं में
वितरित कर दी हैं जिसके बल पर

दृश्यजगत की उत्पत्ति, पालन तथा संहार होता है। हे भगवान्, आप दृढसंकल्प हैं और समस्त जीवों के भगवान् हैं। आपने उन्हीं के लिए यह संसार रचा और यद्यपि आप एक हैं, किन्तु आपकी शक्तियाँ अनेक प्रकार से कार्य करती हैं। यह हमारे लिए अकल्पनीय है।

श्लोक 4: आपने मेरे उदर से श्रीभगवान् के रूप में जन्म लिया है। हे भगवान्, यह उस परमेश्वर के लिए किस प्रकार सम्भव हो सका जिसके उदर में यह सारा दृश्य-जगत स्थित

है? इसका उत्तर होगा कि ऐसा सम्भव है, क्योंकि कल्प के अन्त में आप वटवृक्ष की एक पत्ती पर लेट जाते हैं और एकछोटे से बालक की भाँति अपने चरणकमल के अँगूठे को चूसते हैं।

श्लोक 5: हे भगवान्, आपने पतितों के पापपूर्ण कर्मों को घटाने तथा उनके भक्ति एवं मुक्ति के ज्ञान को बढ़ाने के लिए यह शरीर धारण किया है। चूँकि ये पापात्माएँ आपके निर्देश पर आश्रित हैं, अतः आप स्वेच्छा से सूकर तथा अन्य रूपों में

अवतरित होते हैं। इसी प्रकार आप अपने आश्रितों को दिव्य ज्ञान वितरित करने के लिए प्रकट हुए हैं।

श्लोक 6: उन व्यक्तियों की आध्यात्मिक उन्नति के विषय में क्या कहा जाय जो परम पुरुष का प्रत्यक्ष दर्शन करते हैं, यदि कुत्ता खाने वाले परिवार में उत्पन्न व्यक्ति भी भगवान् के पवित्र नाम का एक बार भी उच्चारण करता है अथवा उनका कीर्तन करता है, उनकी लीलाओं का श्रवण करता है, उन्हें नमस्कार करता है, या कि उनका स्मरण करता है, तो

वह तुरन्त वैदिक यज्ञ करने के लिए योग्य बन जाता है।

श्लोक 7: ओह! वे कितने धन्य हैं जिनकी जिह्वाएँ आपके पवित्र नाम का जप करती हैं! कुत्ता खाने वाले वंशों में उत्पन्न होते हुए भी ऐसे पुरुष पूजनीय हैं। जो पुरुष आपके पवित्र नाम का जप करते हैं उन्होंने सभी प्रकार की तपस्याएँ तथा हवन किये होंगे और आर्यों के सदाचार प्राप्त किये होंगे। आपके पवित्र नाम का जप करते रहने के लिए उन्होंने तीर्थस्थानों में स्नान किया होगा, वेदों का अध्ययन

किया होगा और अपेक्षित हर वस्तु की पूर्ति की होगी।

श्लोक 8: हे भगवान्, मुझे विश्वास है कि आप कपिल नाम से स्वयं पुरुषोम भगवान् विष्णु अर्थात् परब्रह्म हैं। सारे ऋषि-मुनि इन्द्रियों तथा मन के उद्वेगों से मुक्त होकर आपका ही चिन्तन करते हैं, क्योंकि आपकी कृपा से ही मनुष्य भव-बन्धन से छूट सकता है। प्रलय के समय सारे वेद आपमें ही स्थान पाते हैं।

श्लोक 9: इस प्रकार अपनी माता के शब्दों से प्रसन्न होकर

मातृवत्सल भगवान् कपिल ने
गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया।

श्लोक 10: भगवान् ने कहा : हे
माता, मैंने आपको जिस आत्म-
साक्षात्कार के मार्ग का उपदेश दिया
है, वह अत्यन्त सुगम है। आप बिना
कठिनाई के इसका पालन कर सकती
हैं और ऐसा करके आप इसी शरीर
(जन्म) में शीघ्र ही मुक्त हो सकती हैं।

श्लोक 11: हे माता, जो लोग
वास्तव में अध्यात्मवादी हैं, वे निश्चित
ही मेरे उपदेशों का पालन करते हैं,
जो मैंने आपको बताये हैं। आप

आश्वस्त रहें, यदि आप इस आत्म-साक्षात्कार के मार्ग पर सम्यक रीति से चलेंगी तो आप समस्त भयावह भौतिक कल्मष से मुक्त होकर अन्त में मेरे पास पहुँचेंगी। हे माता, जो लोग भक्ति की इस विधि से अवगत नहीं हैं, वे जन्म-मरण के चक्र से बाहर नहीं निकल सकते।

श्लोक 12: श्री मैत्रेय ने कहा :
अपनी ममतामयी माता को उपदेश देकर भगवान् कपिल ने उनसे आज्ञा माँगी और अपना लक्ष्य पूरा हो जाने

के कारण उन्होंने अपना घर छोड़ दिया।

श्लोक 13: अपने पुत्र के उपदेशानुसार देवहूति उसी आश्रम में भक्तियोग का अभ्यास करने लगीं। उन्होंने कर्दम मुनि के घर में समाधि लगाई, जो फूलों से इस प्रकार सुसज्जित था मानो सरस्वती नदी का फूलों का मुकुट हो।

श्लोक 14: वे तीन बार स्नान करने लगीं और इस तरह उनके घुँघराले काले-काले बाल क्रमशः भूरे पड़ गये। तपस्या के कारण उनका

शरीर धीरे-धीरे दुबला हो गया और वे पुराने वस्त्र धारण किये रहीं।

श्लोक 15: प्रजापति कर्दम का घर तथा उनकी गृहस्थी उनकी तपस्या तथा योग के बल पर इस प्रकार समृद्ध थी कि उनके ऐश्वर्य से आकाश में विमान से यात्रा करने वाले लोग भी ईर्ष्या करते थे।

श्लोक 16: यहाँ पर कर्दम मुनि के घरेलू ऐश्वर्य का वर्णन हुआ है। चादर तथा चटाइयाँ दूध के फेन के समान श्वेत थीं, कुर्सियाँ तथा बेंचें हाथीदाँत की बनी थीं और वे सुनहरी

जरीदार वस्त्र से ढकी थीं तथा पलंग सोने के बने थे जिन पर अत्यन्त मुलायम गदियाँ थीं।

श्लोक 17: घर की दीवालें उत्तमकोटि के संगमरमर की थीं और बहुमूल्य मणियों से अलंकृत थीं। वहाँ प्रकाश की आवश्यकता न थी, क्योंकि इन मणियों की किरणों से घर प्रकाशित था। घर की सभी स्त्रियाँ आभूषणों से अलंकृत थीं।

श्लोक 18: मुख्य घर का आँगन सुन्दर बगीचों से घिरा था जिनमें मधुर सुगन्धित फूल तथा अनेक वृक्ष थे

जिनमें ताजे फल उत्पन्न होते थे और वे ऊँचे तथा सुन्दर थे। ऐसे बगीचों का आकर्षण यह था कि गाते पक्षी वृक्षों पर बैठते और उनके कलरव से तथा मधुमक्खियों की गुंजार से सारा वातावरण यथासम्भव मोहक बना हुआ था।

श्लोक 19: जब देवहूति उस सुन्दर बगीचे में कमल फूलों से भरे हुए ताल में स्नान करने के लिए प्रवेश करतीं तो स्वर्गवासियों के संगी गर्ध्वगण कर्दम के महिमामय गृहस्थ जीवन का गुणगान करते। देवहूति के

महान् पति कर्दम उन्हें सभी कालों में सुरक्षा प्रदान करते रहे।

श्लोक 20: यद्यपि उनकी स्थिति सभी प्रकार से अद्वितीय थी, किन्तु साध्वी देवहूति ने इतनी सम्पत्ति होते हुए भी, जिसकी ईर्ष्या स्वर्ग की सुन्दरियाँ भी करती थीं, अपने सारे सुख त्याग दिये। उन्हें यह शोक था कि उनका इतना महान् पुत्र उनसे विलग हो रहा है।

श्लोक 21: देवहूति के पति ने पहले ही गृहत्याग करके संन्यास आश्रम ग्रहण कर लिया था और तब

उनके एकमात्र पुत्र कपिल ने घर छोड़ दिया। यद्यपि उन्हें जीवन तथा मृत्यु के सारे सत्य ज्ञात थे और यद्यपि उनका हृदय सभी प्रकार के मल से रहित था, किन्तु वे अपने पुत्र के जाने से इस तरह दुखी थीं जिस प्रकार कि बछड़े के मरने पर गाय दुखी होती है।

श्लोक 22: हे विदुर, इस प्रकार अपने पुत्र भगवान् कपिलदेव का ध्यान करती हुईं वे शीघ्र ही उत्तम ढंग से सजे अपने घर के प्रति अनासक्त हो उठीं।

श्लोक 23: तत्पश्चात् निरन्तर
हँसमुख अपने पुत्र भगवान् कपिलदेव
से अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक एवं
विस्तारपूर्वक सुनकर देवहूति परमेश्वर
के विष्णुस्वरूप का निरन्तर ध्यान
करने लगीं।

श्लोक 24-25: उन्होंने भक्ति में
गम्भीरतापूर्वक संलग्न रह कर ऐसा
किया। चूँकि उनका वैराग्य प्रबल था,
अतः उन्होंने मात्र शरीर की
आवश्यकताओं को ग्रहण किया। वे
ब्रह्म साक्षात्कार के कारण ज्ञान में
व्यवस्थित हुईं, उनका हृदय शुद्ध हो

गया, वे भगवान् के ध्यान में पूर्णतः
निमग्न हो गईं और प्रकृति के गुणों से
उत्पन्न सारी दुर्भावनाएँ समाप्त हो
गईं।

श्लोक 26: उनका मन भगवान्
में पूर्णतः निमग्न हो गया और उन्हें
स्वतः निराकार ब्रह्म का बोध हो गया।
ब्रह्म-सिद्ध आत्मा के रूप में वे भौतिक
जीवन-बोध की उपाधियों से मुक्त हो
गईं। इस प्रकार उनके सारे क्लेश मिट
गये और उन्हें दिव्य आनन्द प्राप्त
हुआ।

श्लोक 27: नित्य समाधि में स्थित होने तथा प्रकृति के गुणों से उत्पन्न भ्रम से मुक्त होने के कारण उन्हें अपना शरीर वैसे ही भूल गया जिस तरह मनुष्य को स्वप्न में अपने विविध शरीर भूल जाते हैं।

श्लोक 28: उसके शरीर की देखभाल उसके पति कर्दम द्वारा उत्पन्न अप्सराओं द्वारा की जा रही थी और चूँकि उस समय उसे किसी प्रकार की मानसिक चिन्ता न थी, अतः उसका शरीर दुर्बल नहीं हुआ।

वह धुएँ से घिरी हुई अग्नि के समान प्रतीत हो रही थी।

श्लोक 29: भगवान् के विचार में सदैव तल्लीन रहने के कारण उसे इसकी सुधि भी न रही कि उसके बाल बिखर गये हैं और उसके वस्त्र अस्त-व्यस्त हो गये हैं।

श्लोक 30: हे विदुर, कपिल द्वारा बताये गये नियमों का पालन करते हुए देवहूति शीघ्र ही भव बन्धन से मुक्त हो गई और बिना कठिनाई के परमात्मास्वरूप भगवान् को प्राप्त हुईं।

श्लोक 31: हे विदुर, जिस स्थान पर देवहूति ने सिद्धि प्राप्त की वह स्थान अत्यन्त पवित्र माना जाता है। यह तीनों लोकों में सिद्धपद के नाम से विख्यात है।

श्लोक 32: हे विदुर, उनके शरीर के तत्व पिघलकर जल बन गये और अब समस्त नदियों में सबसे पवित्र नदी के रूप में बह रहे हैं। जो भी इस नदी में स्नान करता है उसे सिद्धि प्राप्त होती है, अतः सिद्धि के इच्छुक लोग उसमें स्नान करते हैं।

श्लोक 33: हे विदुर, महामुनि
भगवान् कपिल अपनी माता की
आज्ञा से अपने पिता का आश्रम
छोड़कर उत्तरपूर्व दिशा की ओर चले
गये।

श्लोक 34: जब वे उत्तर दिशा
की ओर जा रहे थे तो चारणों,
गन्धर्वों, मुनियों तथा अप्सराओं ने
उनकी स्तुति की और सब प्रकार से
उनका सम्मान किया। समुद्र ने उनका
पूजन किया और रहने के लिए स्थान
दिया।

श्लोक 35: आज भी कपिल मुनि तीनों लोकों के बद्धजीवों के उद्धार हेतु वहाँ समाधिरस्थ हैं और सांख्य दर्शन के समस्त आचार्य उनकी पूजा करते हैं।

श्लोक 36: हे पुत्र, तुम्हारे पूछे जाने पर मैंने तुम्हें बताया। हे पापरहित, कपिलदेव तथा उनकी माता के वृत्तान्त तथा उनके कार्यकलाप समस्त वार्ताओं में शुद्धतम् हैं।

श्लोक 37: कपिलदेव तथा उनकी माता के व्यवहारों का विवरण

अत्यन्त गोपनीय है और जो भी इस
वृत्तान्त को सुनता या पढ़ता है, वह
गरुड़ध्वज भगवान् का भक्त बन जाता
है और बाद में उनकी दिव्य प्रेमा-भक्ति
में प्रवृत्त होने के लिए भगवद्धाम में
प्रवेश करता है।

* * * * *

श्रीलगुरुदेव